आईये मन्दर्जा ज़ेल सहीफ़ों के साथ एहतमाम करते हैं:

क्यूँके ख़ुदा ने दुनिया से ऐसी महब्बत रखी के उसने अपना इकलौता बेटा (यिसु मसीह) बख़्श दिया, ताके जो कोई उस पर (यिसु मसीह पर) ईमान लाए हलाक न हो, बल्के हमेशा की ज़िन्दगी पाए। क्यूँके ख़ुदा ने बेटे (यिसु मसीह) को दुनिया में इसलिए नहीं भेजा के दुनिया पर सज़ा का हुक्म करे, बल्के इसलिए के दुनिया उसके वसीले से नजात पाए। जो उस पर ईमान लाता है उस पर सज़ा का हुक्म नहीं होता, जो उस पर ईमान नहीं लाता उस पर सज़ा का हुक्म हो चुका; इसलिए के वो ख़ुदा के इकलौते बेटे के नाम पर ईमान नहीं लाया।" [4]

"चुनांचे इब्न-ए-आदम (यिसु मसीह) इसलिए नहीं आया के ख़िदमत ले, बल्के इसलिए के ख़िदमत करे, और अपनी जान बहुतेरों के बदले फ़िदिये में दे। [क़ीमत देकर ख़रीद लेना]।"[5]

"लेकिन जितनों ने उसे (यिसु मसीह को) क़ुबूल किया, उसने (ख़ुदा) उन्हें ख़ुदा के फ़र्ज़न्द बनने का हक़ बख़्शा, या'नि उन्हें जो उसके नाम पर (यिसु मसीह के) ईमान लाते हैं।"[6]

ख़ुदा के बेटे यिसु मसीह के बारे में सहीफ़े क्या ब्यान करते हैं?

वो कहते हैं:

- ख़ुदा ने दुनिया से ऐसी महब्बत रखी के उसने अपना इकलौता बेटा (यिसु मसीह) बख़्श दिया
- अगर हम ख़ुदा के बेटे पर ईमान रखते हैं तो हम हलाक नहीं होंगे (ग़ज़ब-ए-इलाही का सामना नहीं करेंगे) बल्के हमेशा की ज़िन्दगी पाएंगे
- ख़ुदा ने यिसु को दुनिया पर सज़ा का हुक्म करने के लिए नहीं भेजा बल्के इसलिए की दुनिया उसके वसीले से नजात पाए
- अगर हम यिसु पर ईमान लाएं हैं, तो हम पर सज़ा का हुक्म नहीं होगा
- मसीह ने हमारे गुनाहों के बदले फ़िदया में अपनी जान दी; दुसरे अल्फ़ाज़ में मसीह ने क़ीमत देकर हमें ख़रीद लिया है
- नतीजतन ख़ुदा के फ़र्ज़न्द बनने के लिए, ज़रूरी है के हम यिसु मसीह को क़बूल करें और उसपर ईमान लाएं

1. **रोमियों** 5:6-10
2. **रोमियों** 3:23
3. 1 **कुरिन्थियों** 15:1-4
4. **यूहन्ना** 3:16-18
5. **मत्ती** 20:28
6. **यूहन्ना** 1:12

(निजी तक़सीम के लिए)

म़जीद मा'लूमात के लिए राब्ता करें:
whoisjesus008@gmail.com

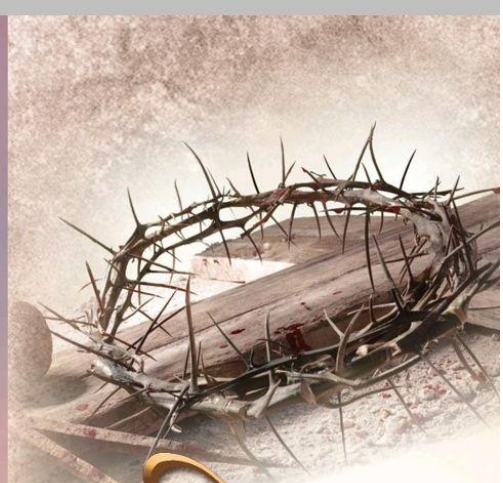

यिसु कौन है?

یسُوع کون ہے؟

यिसु कौन है?

कुछ लोग कहते हैं के यिसु मसीह एक बेहतरीन मुअल्लिम, एक नेक इंसान और एक जलील उल क़द्र नबी थाः तो वहीं कुछ लोग कहते हैं के वह ख़ुदा का बेटा था। ख़ुदाए मुजस्सिम।

आप क्या सोचते हैं ?

यिसु की ज़िन्दगी का मक़सद क्या था?

ये जानना मेरी ज़िन्दगी के लिए एहम क्यों है?

इन सवालात के जवाब देने के लिये हमें बा'ज़ सहीफ़ों की जाँच पड़ताल करने की ज़रुरत है ताके हम ख़ुद देख सकें के किताबे मुक़द्दस (बाइबिल) क्या कहती है। आइये मुता'ला करें:

"क्यूँके जब हम कमज़ोर ही थे, तो ऐन वक़्त पर मसीह बे-दीनों की ख़ातिर मुआ। किसी रास्तबाज़ की ख़ातिर भी मुश्किल से कोई अपनी जान देगा, मगर शायद किसी नेक आदमी के लिए कोई अपनी जान तक दे देने की जुरअत करे; लेकिन ख़ुदा अपनी महब्बत की ख़ूबी हम पर यूँ ज़ाहिर करता है के जब हम गुनहगार ही थे तो मसीह हमारी ख़ातिर मुआ। पस जब हम उसके ख़ून के बा'इस अब रास्तबाज़ ठहरे, तो उसके वसीले से ग़ज़ब-ए-इलाही से ज़रूर ही बचेंगे। क्यूँके जब बावुजूद दुश्मन होने के ख़ुदा से उसके बेटे की मौत के वसीले से हमारा मेल हो गया, तो मेल होने के बा'द तो हम उसकी ज़िन्दगी के सबब से ज़रूर ही बचेंगे।"[1].

"…. इसलिए के सबने गुनाह किया और ख़ुदा के जलाल से महरूम हैं [ख़ुदावंद करीम के अज़ीमुलशान म्यारी पैमाना पर हल्के पाए गए]।"[2]

मन्दर्जा बला आयात में तमाम इंसानों के बारे में चंद हक़ायक़ का ज़िक्र है। उनके हिसाब से हम

- कमज़ोर हैं (बेबस)
- बे-दीन हैं
- गुनहगार हैं जो ख़ुदा के जलाल से महरूम हैं
- ख़ुदा के दुश्मन हैं (हमारी गुन्हागार फ़ितरत की वजेह से)
- अगर हम उसके बेटे पर ईमान नहीं रखते हैं तो ख़ुदा के ग़ज़ब का सामना करेंगे

मन्दर्जा बाला सहीफ़े ये भी कहते हैं के:

- मसीह बे-दीनों के ख़ातिर मरा (हम सब के लिए)
- हमारे लिए ख़ुदा की महब्बत इस तरह ज़ाहिर होती है के मसीह हमारी ख़ातिर मुआ जबकि हम गुनहगार थे
- मसीह के ख़ून (लहू) में हम रास्तबाज़ (पूरी तरह पाक साफ़) साबित होते हैं
- मसीह के ज़रिये ख़ुदा के ग़ज़बे (क़ेहर) से बचा लिए गए
- मसीह की मौत के वसीले से ख़ुदा के साथ हमारा मेल हो गया (ख़ुदा का रेहम पाकर)
- मसीह की ज़िन्दगी के सबब से (ज़रिये) हम बचा लिए जाएंगे

मज़ीद वज़ाहत के लिए आइये आगे पढ़ें :

अब ऐ भाईयों! मैं तुम्हें वुही ख़ुशख़बरी जताए देता हूँ जो पहले दे चुका हूँ, जिसे तुम ने क़ुबूल भी कर लिया था और जिस पर क़ाइम भी हो। उसी के वसीले से तुम को नजात भी मिलती है, बशर्ते के वो ख़ुशख़बरी जो मैंने तुम्हें दी थी याद रखते हो, वर्ना तुम्हारा ईमान लाना बेफ़ाइदा हुआ। चुनाँचे मैंने सबसे पहले तुम को वुही बात पहुँचा दी जो मुझे पहुँचा थी के मसीह किताब-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ हमारे गुनाहों के लिए मुआ, और दफ़्न हुआ, और तीसरे दिन किताब-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ जी उठा।"[3]

इंजील का मत्लब है ख़ुशख़बरी। मज़कूर है सहीफ़ों के मुताबिक़ ख़ुशख़बरी क्या है?

- किताब-ए-मुक़द्दस (सहीफ़ों) के मुताबिक़ मसीह हमारे गुनाहों के लिए मुआ (मरा)
- मसीह को दफ़्न किया गया
- किताब-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ मसीह तीसरे दिन जी उठा (दोबाराह ज़िन्दा हो गया)

सहीफ़ों के ही मुताबिक़ ज़रूरी है के हम

- इस ख़ुशख़बरी को क़बूल करें और उस पर ईमान लाएं
- हमें उसी ख़ुशख़बरी पर क़ाइम रहने और उसे म़जबूती से पकडे रहने की ज़रूरत है
- उसी ख़ुशख़बरी के ज़रिये हमें नजात मिली है